English

setuu अध्याय 22

0

Soul Himanshu

Like You and 20K others like this.

धारणा रहित मन : चिरंजीवी हनुमान जी ने सुनाई अहल्या की कथा

यह चरण पूजा का आठवां सत्र था जिसकी यजमान बनी दयानी नाम की एक मातंग महिला | उसकी आत्मा की पवित्रता हेतु हनुमान जी बोले , "हे मातांगो, मैं यह व्याख्यान माता सीता के जीवन से एक घटना सुनाकर शुरू करूँगा |

"माता सीता ने मुझे एक बार बताया था कि जब वे 10 साल की थी तब उन्होंने किसी को उनके पिता जनक की बुराई करते सुना था |

"हर रोज की भांति राजा जनक के महल के सभागार में दो कर्मी तेल के दीयों को पुनः भरने का कार्य कर रहे थे | माता सीता ने एक कर्मी को कहते सुना , 'गरीब लोग एक एक बूंद तेल के लिए कठिन परिश्रम करते हैं और एक ये घिनौना अमीर जनक है जो सैकड़ो दीयों का आनंद लेता है | और यह इस चमचमाते कक्ष में करता क्या है ? नाच गाने का आनंद लेता होगा ना?"

"युवा सीता को पता था कि उनके पिता अपना हर क्षण प्रजा की भलाई के काम में बीताते हैं | तो फिर क्यों कोई उनके बारे में ऐसी बाते कर रहा था | इस सवाल से परेशान वे पूरी रात जगती रही और अगली सुबह उन्होंने अपने पिता जनक को इस बारे में बताया |

"जनक को विश्वास नहीं हुआ कि एक कर्मी जो महल के सबसे पुराने कर्मियों में से एक था , को उनके बारे में ऐसी गलतफहमी थी | उन्होंने तुरंत उस कर्मी को अपने पास बुलाकर इस बारे में पूछा |

"कर्मी ने उत्तर दिया , "हे राजन , वह मैं नहीं था | वह तो मेरा एक निषाद मित्र था | वह पृथु वर्ग और खासकर राजाओं के बारे में बुरा बाते करने में पहले से प्रवृत है | मैंने उसकी सोच को बदलना चाहा इसलिए उसको यहाँ काम करने के लिया ले आया | सभागार में दीये जलाने के पश्चात मैंने उसको सामने आँगन में काम करने में लगा दिया ताकि वो आपको सभागार में एक के बाद एक बैठके बिना विश्राम किये लेते देखे |'

"तो क्या उससे उसकी मेरी बारे में धारणा बदली?" राजा जनक ने पूछा |

" 'नहीं , दुर्भाग्य से नहीं श्रीमान|" कर्मी ने उत्तर दिया , "मैंने सोचा था कि आपको कठिन परिश्रम करता देखने के बाद वो आपके बारे में गलत सोच रखने के लिए खेद प्रकट करेगा | लेकिन मुझे अचम्भा हुआ जब वो बोला – "कर्म सबको बराबर कर देता है भाई | ये राजा लोगो के पास इतनी धन सम्पति है लेकिन मन की शांति नहीं है | ऐसा ही होना चाहिए इन राजा लोगो के साथ |"

“राजा जनक मुस्कुराए और बोले – ‘हे कर्मी , मुझे इस बात का संज्ञान है कि तुमने अपने निषाद मित्र की गलतफहमियां दूर करने का प्रयास किया लेकिन मानव मन ऐसे काम नहीं करता | मानव मन को वास्तविकता दिखाई नहीं देती | इसको सिर्फ वास्तविकता का एक पहलु दिखाई देता है | इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं कौन हूँ , तुम्हारा मन अपने विन्यासों के अनुसार मुझे देखेगा | और तुम्हारे मित्र का मन उसके अपने विन्यासों के अनुसार| मेरी अपनी बेटी को ही ले लो ,’ जनक ने बाल सीता की ओर इशारा किया जो उनके इन ज्ञान के शब्दों को समझने की कोशिश कर रही थी, ‘मेरी बेटी भी मेरा वास्तविक रूप नहीं देख सकती | उसका मन मेरी कमियों को नहीं देखता | उसका मन मेरा एक पहलु देख सकता है , मेरा पूर्ण सत्य नहीं |’

“जनक ने एक क्षण का विश्राम लिया ताकि सीता उनके शब्दों को अच्छे से ग्रहण कर सके और फिर बोले – ‘मैं स्वयं भी अपना वास्तविक रूप नहीं देख सकता | मैं भी अपना केवल एक पहलु देख सकता हूँ | सच यह है कि मैंने तो अपना चेहरा स्वयं नहीं देखा है | मैंने अपना चेहरा या तो किसी आईने में देखा है अथवा किसी से वर्णन सुना है | आईने और दूसरों के बताये अनुसार मेरे मन में मेरी एक स्वयं की तस्वीर दर्ज है | वह तस्वीर भी मेरा असली रूप नहीं है | वह मेरे मन द्वारा रचित एक पहलु मात्र है | अतः , मेरी अच्छाइयों को कितना भी अपने मित्र के सामने लाने की कोशिश करो , उसका मन उन अच्छाइयों को उसके अपने विश्वास, धारणा तथा अन्य तथ्यों के अनुसार तोड़ मरोड़ लेगा |’

“हे मातांगो, देवी सीता ने अपने जीवन से यह किस्सा मुझे तब सुनाया था जब मैंने उनसे पुछा था कि कुछ लोग उनके बारे में गलत क्यों बोलते थे | उन्होंने यह पाठ बचपन में ही सीख लिया था और अब मैं चाहता हूँ कि आप सब यह सीखो क्योंकि यह देवी अहल्या के बारे में जानने के लिए आवश्यक है |

“यह पाठ आपको आसान लग रहा होगा किन्तु यह विश्व के उन रहस्यों में से एक है जिसे समझने में मानव मन को बहुत कठिनाई होती है | आपको यह पाठ अच्छे से समझाने के लिए मैंने इंद्र देव की शक्तियों का आव्हान यहाँ पर किया है | इन शक्तियों का प्रयोग देवताओं के लिए भी वर्जित है | मैंने इन शक्तियों का आह्वान केवल और केवल आपको ब्रह्मज्ञान देने के लिए किया है |

“अब—’ हनुमान जी ने दयानी को आगे आकर उनके आसन के सामने बने छोटे से जलाशय के किनारे पर खड़े होने के लिए कहा |

दयानी ने हनुमान जी को अपनी पलके झपकाते देखा और फिर आस पास सब कुछ गायब हो गया | रह गई तो केवल दयानी , हनुमान जी और चारों ओर धुंधला बादल सा |

हनुमान जी बोले – “हे दयानी, मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे माथे पर अपनी दृष्टि टिकाओ | मेरे माथे के बीचों बीच तुम्हे क्या दिखाई दे रहा है?”

“एक तिलक” उसने उत्तर दिया |

“इसका वर्णन करो|” हनुमान जी ने दिव्य वाणी से निर्देश दिया |

दयानी ने उनके माथे को कुछ पल के लिए ध्यान से देखा और फिर असपष्ट वाणी से बोली – “प्रभु , दो लाल लम्बवत रेखाएं है जो तल से मिली हुई है |”

“क्या तुम्हे पूर्ण विश्वास है कि ये रेखाएं लाल हैं , भगवा नहीं?”

“मेरे हिसाब से तो लाल हैं , प्रभु |” दयानी ने अनिश्चित वाणी में कहा |

“ठीक है | क्या तुम्हे केवल यही दिख रहा है ? दो लम्बवत लाल रेखाएं? क्या तुम्हे पूर्ण विश्वास है कि किसी अन्य रंग इधर उधर नहीं है?” हनुमान जी ने पुछा |

“मुझे कोई अन्य रंग दिखाई नहीं देता , प्रभु |” दयानी ने उत्तर दिया |

“अच्छा|” हनुमान जी बोले – “तुम्हारा मन मेरे माथे पर दो लम्बवत लाल रेखाए देख रहा है | और कैसे देख रहा है? प्रकाश के माध्यम से | अगर यहाँ पर प्रकाश न होता तो तुम्हारे मन को कुछ नहीं दिखता | अर्थात तुम्हारा मन प्रकाश के माध्यम से मेरे तिलक के बारे में कुछ सूचनाएं प्राप्त कर रहा है जिसके द्वारा मन एक तस्वीर बनाता है जिसमे मेरे माथे पर दो लम्बवत लाल रेखाएं हैं | लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि वास्तव में मेरे माथे पर लाल रेखाएं हैं | मेरे माथे पर श्वेत , भगवा अथवा रंगहीन रेखाएं भी हो सकती हैं लेकिन तुम्हारे मन उनको लाल देख रहा है |

“प्रकाश मात्र एक साधन नहीं है जिसके माध्यम से तुम्हारा मन सूचनाएं प्राप्त कर सकता है | उदाहरंतः ध्वनी एक अन्य साधन है जिसके माध्यम से तुम्हारे मन को सूचना प्राप्त हो सकती है |

हनुमान जी ने पुनः पलक झपकाई और कुछ शब्द धीरे से बोला | दयानी के कानो तक एक जानी पहचानी आवाज पहुंची – “हाँ , मैं दो लम्बवत लाल रेखाएं देख रहा हूँ जो नीचे तल में जुडी हुई हैं |”

दयानी ने उस आवाज के स्त्रोत का रूख किया | यह उसके पति की आवाज थी जो उससे थोड़ी दूर पर हनुमान जी की ओर मुंह करके खड़ा था |

दयानी बोली – “हे प्रभु, पहले मुझे पूर्ण विश्वास नहीं था कि ये रेखाएं लाल रंग हैं अथवा भगवा | अब जबकि मेरे पति को भी ये लाल ही दिख रही हैं , तो मुझे विश्वास हो गया है कि ये लाल है |

हनुमान जी बोले – “अपने पति को एक पल के लिए भूल जाओ | केवल उस जानी पहचानी आवाज पर ध्यान दो जो तुम्हारे कानो तक पहुंची | उस आवाज में मेरे तिलक के बारे में एक सूचना थी |

“पहले मेरे तिलक के बारे में सूचना का केवल एक अंश था जो प्रकाश के माध्यम से तुम्हारे पास पहुँच रहा था | तब तुम्हे पूर्ण विश्वास नहीं था कि ये लाल रेखाएं हैं अथवा भगवा | अब जबकि सूचना का दूसरा अंश तुम तक तुम्हारे पति की आवाज के रूप में पहुंचा है , इन दोनों सूचना अंशों को मिलाकर तुम्हारे मन ने यह निष्कर्ष निकाला है कि ये रेखाएं निश्चय ही लाल है |

“लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि मेरा तिलक लाल है | इसका केवल यह अर्थ है कि सूचना के दो अंशों के अनुसार तुम्हारा मन इसे लाल देख रहा है |

“अगर हज़ार लोग यह कहें कि यह लाल है उसका अर्थ यह नहीं है कि मेरा तिलक वास्तव में लाल है | वे केवल सूचना के हज़ार अंश मात्र हैं जिनके माध्यम से तुम्हारा मन एक निष्कर्ष निकालता है |”

हनुमान जी ने एक मिनट ध्यान मुद्रा में अंतराल लिया | फिर एक बार अपनी पलक झपकाई और एक शब्द कहा | एक और जानी पहचानी आवाज दयानी के कानो तक पहुंची – “प्रभु, हाँ आपके तिलक में दो लाल रेखाएं हैं जो तली में मिल रही हैं | मैं इन रेखाओं के दोनों तरफ एक पीले रंग की छाया भी देख रहा हूँ |”

दयानी ने इस आवाज की पहचान उर्वा के रूप में की लेकिन वह उसकी ओर देखने के लिए नहीं मुड़ी | उसने इसको मात्र सूचना का एक अंश समझा जो उसके मन तक पहुच रहा था | उसने हनुमान जी के तिलक को ध्यानपूर्वक फिर से देखा तो पाया कि वाकई एक पीले रंग की छाया थी जिस पर उसने पहले ध्यान नहीं दिया था|

"ओह , मैंने पहले इस पीली छाया पर ध्यान नहीं दिया |" दयानी बुदबुदाई |

हनुमान जी तुरंत बोले – "ध्यान से, दयानी | तुम्हारी यह सोच कि "ओह , मैंने पहले इस पीली छाया पर ध्यान नहीं दिया" भी एक सूचना का अंश है जिसको तुम्हारे मन ने कही से अभी अभी पकड़ा है |

"अतः अब तुम्हारे मन के पास सूचना के 4 अंश हैं – (1) सबसे पहले, तुमने मेरे तिलक को अपनी आँखों से देखा | अर्थात सूचना प्रकाश के माध्यम से तुम्हारे मन तक पहुंची | उस सूचना के आधार पर तुम्हारे मन ने निष्कर्ष निकाला कि मेरा तिलक दो लाल अथवा भगवा रेखाओं से बना है |

"(2) तुम्हारे मन ने दूसरा सूचना का अंश तुम्हारे पति की आवाज के रूप में प्राप्त किया | इससे तुमने निष्कर्ष निकाला कि तिलक निश्चय ही लाल है ,भगवा नहीं |

"(3) फिर तुमने उर्वा की आवाज सुनी जिससे तुम्हारे मन का ध्यान पीली छाया कि ओर गया | यह तुम्हारा तीसरा सूचना का अंश था और यह ध्वनि के माध्यम से तुम्हारे मन तक पहुंचा |

"(4) अब चौथा सूचना का अंश तुम्हे यह विश्वास दिलाना चाह रहा है कि पीली छाया पहले से ही थी लेकिन पहले तुमने उस पर ध्यान नहीं दिया था | यह चौथा सूचना का अंश कहाँ से आया है ? प्रकाश से नहीं आया | ध्वनि से नहीं आया | तो कहाँ से आया ? तुम्हारे मन ने स्वयं ही इस सूचना को सृजित कर लिया |

"इन चार सूचना के अंशों के माध्यम से इस समय तुम्हारा मन इस निष्कर्ष पर है कि मेरा तिलक दो लाल रेखाओं और उनके दोनों तरफ की पीली छाया से बना है |

"हे दयानी , तुम्हारा मन केवल प्राप्त हुए सूचना के अंशों से एक मानसिक चित्र तैयार करता है | अगर तुम्हारा मन किसी चीज के बारे में अरबों सूचना के अंश प्राप्त करके भी कोई मानसिक चित्र बनाता है तो भी वह चित्र उस वास्तविक चीज जैसा नहीं होगा |

"अहल्या का वृत्तांत समझने के लिए तुम्हे यह सत्य समझना अति आवश्यक है | अब चलो मैं तुम्हे वापिस हनुमंडल में ले चलता हूँ ..."

हनुमान जी ने कुछ उच्चारण किया जो संभवतः भगवन इंद्र के लिए कोई निर्देश था | दुसरे ही क्षण दयानी ने स्वयं को हनुमंडल में खड़ा पाया जहाँ सभी मातंग विचारों में डूबे थे , जिसका अर्थ था कि दयानी और हनुमान जी के बीच जो वार्तालाप हुआ वह वे भी सुन रहे थे |

उनके विचारो की गाडी एक डर की चीख से डगमगा गई | सभी ने वह आवाज सुनी , "बचाओ , प्रभु, बचाओ , मैं स्वयं को महसूस नहीं कर पा रही हूँ |"

वह दयानी की आवाज थी लेकिन जिस स्थान पर मातंगों ने उसे पुनः प्रकट होते देखा था वह वहां नहीं थी | दयानी कही भी दिखाई नहीं दे रही थी |

“मेरी देह कहाँ है , मुझे अपनी देह महसूस नहीं हो रही है | प्रभु , बचाओ |” भयपूर्ण आवाज पुनः गूंजी | सभी ने संभ्रमित रूप से अपने सिर इधर उधर घुमाये लेकिन उस आवाज के स्रोत को नहीं देख सके | उन्हें लगा कि वह आवाज किसी स्थान विशेष से नहीं आ रही थी | वह आवाज उनके मस्तिष्क में गूंज रही थी |

“हे मातांगो |” हनुमान जी बोले – “जैसा कि आप सब जानते हैं , आपकी देह उस अस्तित्व के द्रव से बनी है जिसका प्रबंधन इंद्र देव के हाथ में है | दयानी की देह को इंद्र ने वापिस ले लिए है , इस पाठ के निमित | घबराने की आवश्यकता नहीं है |

“दयानी की आत्मा अब बिना देह के लटकी है | भगवान् इंद्र उस देह को तब तक वापिस नहीं बना सकते जब तक कि आप उन्हें यह नहीं बता देते कि दयानी देखने में कैसी थी ? उसे सबसे अच्छी तरह कौन जानता था ? आगे आओ | शायद उसका पति सुगथ उसे सबसे अच्छे से जानता होगा |”

सुगठ हनुमान जी के पास आया और श्रद्धा से अपना सिर झुकाया और हनुमान जी के निर्देशों का इंतजार करने लगा |

हनुमान जी ने पूरी सभा को संबोधित करते हुए कहा – “हे मातांगो , आम तौर पर जब आप कुछ वास्तव में देखते हो तो तुम्हारा मन उस चीज का एक मानसिक चित्र बना लेता है | यह एक साधारण मानव शक्ति है |

“लेकिन अगर हम इस प्रक्रिया को उल्टा कर दे तो यह एक असाधारण योग शक्ति बन जाती है : आप किसी चीज का मानसिक चित्र अपने मन में बनाएं और वह चीज आपके सामने वास्तव में प्रकट हो जाए |

“ऋषियों के पास यह शक्ति होती है और वे इसका उपयोग बड़ी जिम्मेदारी से करते हैं | ताड़का इसी शक्ति का प्रयोग जंगल में अपना बुराई का साम्राज्य स्थापित करने के लिए कर रही थी | इंद्र देव की सहायता से आप सबको केवल इस पाठ के निमित्त यह शक्ति प्रदान की गई है | अब दयानी का पति सुगठ इस शक्ति का प्रयोग करेगा | देखना |”

हनुमान जी ने सुगठ का रुख किया और बोले – “हे सुगठ , मैं चाहता हूँ कि तुम दयानी के बारे में जो कुछ जानते हो उसके अनुसार अपने मन में उसका एक मानसिक चित्र बनाओ |”

सुगठ ने दयानी के बारे में सोचा और एक ही पल में उसके मन में वे सभी अनुभव ताजा हो गए जो उसने दयानी के साथ बिताये थे | उसने अपनी आँखें बंद की और उसके वे सभी अनुभव उसके मन में इकठ्ठा हो गए और दयानी , जितना उसको वह जानता था , का मानसिक चित्र बन गया | जब उसने अपने आँखे खोली तो उसने उसी चित्र को अपने सामने जीवंत पाया : दयानी उससे एक फूट दूर उसकी ओर मुंह किये खड़ी थी और उसकी आँखे सुगठ पर टिकी थी |

वह शर्म से लाल हो गया | उसके मन ने स्वयं की देह को पीछे हटने का निर्देश दिया | इससे पहले की वह एक कदम पीछे बढाता , दयानी ने उससे दस कदम पीछे बढ़ा लिए |

“यह वास्तविक दयानी नहीं है|” हनुमान जी बोले – “यह मात्र तुम्हारे मन की रचना है | हां , यह उसी अस्तित्व के द्रव से बनी है जिससे देह बनती है | और तुम एक वास्तविक देह और इस भ्रम में कोई अंतर नहीं बता सकते | तुम इस भ्रम के साथ उसी तरह बातचीत कर सकते हो जैसे वास्तविक दयानी से करते हो | यह भ्रम वाली दयानी बिलकुल वास्तविक दयानी की तरह चल सकती है , बात कर सकती है , हंस सकती है, रो सकती है | अंतर केवल इतना है कि इस भ्रम वाली दयानी में आत्मा नहीं है | आत्मा किसी भी देह को अपने कर्म – इच्छा के अनुसार चलाती है | दूसरी और यह भ्रम-दयानी तुम्हारी इच्छा के अनुसार चलेगी क्योंकि यह तुम्हारा रचा भ्रम है | यह तुम्हारी इच्छा के अनुसार चलेगी और तुम्हारी इच्छा के अनुसार बाते करेगी |

सुगठ भौचक्का रह गया | इतनी वास्तविक दिखने वाली देह उसके मन की रचना कैसे हो सकती थी | क्या अन्य मातंग भी उसके रचे इस भ्रम को देख सकते थे ? उसने यह पता करने के लिए सिर घुमाया और यकीनन सभी मातांगो की आँखें उसी जगह पर टिकी थी जहाँ उसकी रची दयानी खड़ी थी |

हनुमान जी बोले – "जब कोई भ्रम कमजोर होता है , उसे केवल भ्रम को रचने वाला देख सकता है | लेकिन जब भ्रम ताकतवर होता है तो रचना करने वाले की संपर्क में आने वाले लोग भी उस भ्रम को देख सकते हैं |

"हे सुगठ , इस समय इस समय तुम्हारा दयानी का भ्रम इतना ताकतवर है कि तुम्हारे साथी मातंग भी इसे देख सकते हैं | हालाकि वे इसे उतना साफ़ नहीं देख सकते जितना तुम देख रहे हो | कुछ को तो यह भी विश्वास नहीं हो रहा कि जो रचना तुमने की है वो दयानी है | कुछ को तो वहां केवल एक औरत की धुंधली सी आकृति नजर आ रही है | क्यों ? क्योंकि तुम्हारी रचना वो दयानी है जिसे तुम जानते हो | तुम्हारे समाज के हर सदस्य के दयानी के साथ भिन्न अनुभव रहे हैं जिनके अनुसार दयानी के बारे में उनके भिन्न विचार हैं |"

"लेकिन मैं उसे सबसे अच्छे से जानता हूँ |" सुगठ बोला –"जितना वह स्वयं के बारे में खुद नहीं जानती , उससे भी ज्यादा मैं उसको जानता हूँ | लेकिन उसकी आत्मा मेरे द्वारा रचित इस देह में प्रवेश क्यों नहीं कर रही है? जैसे ही उसकी आत्मा इसमें प्रवेश करेगी , यह भ्रम नहीं रहेगा , वास्तविकता बन जायेगी | और हमारे बीच पुनः दयानी होगी |"

"नहीं |" सुगठ के मन में एक आवाज गूंजी | यह दयानी की आवाज थी – "यह मैं नहीं हूँ | मैं यह देह स्वीकार नहीं कर सकती |"

"यह तुम ही हो, प्रिये | विश्वास करो|" सुगठ बोला – "तुम स्वयं के बारे में बहुत सी चीजे नहीं जानती | विश्वास करो, यह तुम ही हो | इस देह को धारण करो और वापिस आ जाओ |"

दयानी की आवाज में कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ |

हनुमान जी बोले – "हे सुगठ , हाँ, यह सत्य है कि एक अजागरूक आत्मा को यह नहीं पता होता कि वह कौन है | वह दुसरे जो भी बताते हैं ,उसे स्वीकार कर लेती है | लेकिन दुर्भाग्य से , दयानी इसे स्वीकार नहीं कर रही जो तुम उसके बारे में क्या सोचते हो |

"आओ , अन्य मातांगो को इस भ्रम को सुधारने का मौका दें | उन्हें भी दयानी के बारे में वे जो भी जानते हैं वह सब इस भ्रम में शामिल करने देते हैं |"

हनुमान जी ने सभी मातांगो को निर्देश दिया कि वे दयानी के बारे में जो कुछ भी याद था उसको मन-चित्रित करें | इंद्र देव की सहायता से उनके मन-चित्र भी उस भ्रम आकृति में शामिल हो गए | अब उनके समक्ष वह दयानी खड़ी थी जिसे वे सब साफ़ देख सकते थे | यह दयानी सुगठ की ओर नहीं देख रही थी अपितु हनुमान जी की ओर देख रही थी | उसका सिर श्रद्धा से झुका था और हाथ जुड़े थे |

हनुमान जी बोले – "हे मातांगो , आप सबने मिलकर दयानी का जो यह भ्रम रचा है वह आप सबकी सामूहिक इच्छाओं से चलेगा | अगर उसकी आत्मा इसमें प्रवेश नहीं भी करती है , आपको अंतर मालुम नहीं पड़ेगा | यह आपका सामूहिक भ्रम है और आप सबके लिए यह वास्तविक जैसा है | वैसे मैं दयानी की आत्मा से जानना अवश्य चाहूँगा कि वह इस भ्रमदेह में प्रवेश करना चाहेगी अथवा नहीं |"

दयानी की आवाज सभी के मन में गूंजी – "नहीं , यह मैं नहीं हूँ | यह मेरी देह नहीं है | मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकती |"

हनुमान जी आवाज में बिना कोई आश्चर्य लाये बोले – "मैं पता करता हूँ कि दयानी की आत्मा आप सबकी बनायी इस देह में प्रवेश क्यों नहीं कर रही है |"

हनुमान जी ने उस भ्रम दयानी की माथे को ऐसे देखा जैसे कोई पुस्तक पढ़ रहे हों | कुछ पल बाद वे बोले – "हज़ारों कारण | हज़ारों | इसमें दयानी की आत्मा का कोई दोष नहीं है कि वह इस देह को स्वीकार नहीं कर रही है | यह भ्रम वह अपने बारे में जो सोचती है उससे बहुत भिन्न है | उदाहरण के तौर पर, मैं देख रहा हूँ कि आप सब सोचते हैं कि दयानी थोड़ी सी घमंडी है | आपने यह भ्रम देह रची है उसमे आपकी यह धारणा साफ़ झलक रही है | लेकिन दयानी सोचती है कि वह घमंडी नहीं है | वह इसको कैसे स्वीकार कर सकती है?

"आप सबने ऐसी बहुत सारी दयानी के बारे में अपनी धारणाएं इस भ्रम रचना में शामिल कर दी हैं | इसीलिए दयानी की आत्मा इसे स्वीकार नहीं कर रही है | अगर आप लोग अपनी धारणाएं इसमें थोपने की बजाये दयानी स्वयं के बारे में क्या सोचती है यह ध्यान में रखकर भ्रम रचना करते तो शायद दयानी की आत्मा इसे स्वीकार कर सकती थी |

"अब हमारे पास केवल एक ही विकल्प बचा है | मैं दयानी की इस भ्रम रचना में दयानी के बारे में अपना पहलु जोड़ता हूँ | मैं ये जोड़ता हूँ कि मैं उसके बारे में क्या सोचता हूँ |

"असल में मेरे पास इसमें जोड़ने के लिए कुछ नहीं है | मैं केवल इसमें से घटाना चाहूँगा आपकी वे सभी धारणाएं जो आपने इसमें जोड़ी हैं | गुरु के रूप में अपने शिष्यों के बारे में मैं कोई धारणाएं नहीं रखता |"

हनुमान जी ने अपनी आँखे बंद करके दयानी का अपने हिसाब से एक चित्र बनाया जिसे इंद्र देव ने दयानी की सामने खड़ी भ्रम देह में समाहित कर दिया |

"हाँ , यह मैं हूँ |" दयानी की आवाज हनुमंडल में गूंजी और उसकी आत्मा ने हनुमान जी रचित देह को धारण कर लिया |

"अब यह भ्रम नहीं है | अब यह एक वास्तविक देह है जिसका नियंत्रण आत्मा कर रही है |" हनुमान जी ने घोषणा की |

देह धारण करने के पश्चात् दयानी ने पहला प्रश्न पूछा – "हे प्रभु , क्या मेरी यह देह जैसे पहली थी वैसी ही है ?"

"ऐसा होना आवश्यक नहीं है |" हनुमान जी ने उत्तर दिया |

"तो मेरी आत्मा ने यां देह स्वीकार क्यों की , प्रभु?"

हनुमान जी ने उतर दिया – "क्योंकि मुझे गुरु के रूप में लगा कि तुम्हारे लिए यह देह सबसे उत्तम है | तुम्हारी आत्मा मुझको समर्पित है | अगर तुम्हारी आत्मा मेरे द्वारा सुझाई किसी चीज को स्वीकार नहीं करती है तो उसका अर्थ है कि या तो मैं गुरु के रूप में नाकाम हो गया अथवा तुम शिष्य के रूप में |

"प्राचीन काल में गुरु यह परीक्षा नियमित रूप से यह देखने के लिए लिया करते थे कि गुरु-शिष्य का रिश्ता कायम है कि नहीं | इसको "आकाश परीक्षा" कहा जाता था |

"यह परीक्षा ऋषियों के आश्रमों में होती थी | ऋषि इंद्र देव को अपने शिष्य की देह वापिस लेने को कह देते थे | फिर ऋषि अपनी शक्ति से देह का निर्माण करते थे | अगर शिष्य उस देह को स्वीकार कर लेता था तो उसका अर्थ था कि गुरु-शिष्य सम्बन्ध कायम था | अगर यह सम्बन्ध टूटा मिलता तो आगे शिक्षा देने का कोई लाभ नहीं था |"

हनुमान जी आगे बोले – "जब भगवान् विष्णु ने राम अवतार लिया तब ऋषि समाज कई समस्याओं से ग्रस्त था | जब भगवान् राम व्यस्क हुए तो ऋषि विश्वामित्र उन्हें उन समस्याओं के निदान हेतु ले गए | इनमे से दो समस्याएं – ताड़का का आतंक और अहल्या का पथ्थर देह धारण करना – ब्रह्मज्ञान के लिए महत्वपूर्ण हैं | मैंने ताड़का के बारे में आपको बता दिया है | अब अहल्या के बारे में बताता हूँ |

"जैसा कि मैंने आपको पहले बताया , पति-पत्नी के रिश्ते में एक समर्पण का तत्व होता है जो गुरु-शिष्य के रिश्ते में आवश्यक होता है | अतः ऋषि अपनी पत्नियों के साथ गुरु-शिष्य के रिश्ते में रहा करते थे | वे प्राय: पृथु स्तर आत्मा से विवाह रचाकर उसे ऋषि स्तर पर लाने का कार्य करते थे | ऋषि गौतम और अहल्या में भी गुरु-शिष्य के सम्बन्ध थे |

"उस दुर्भाग्यपूर्ण सुबह , ऋषि गौतम ने अहल्या को आश्रम के बाग़ के झूले पर बैठे देखा | लेकिन वह अकेली नहीं थी | उसके पास एक सुन्दर पुरुष बैठा था और उसकी बाहें अहल्या के कन्धों पर थी | वे अंतरंग वार्तालाप में मग्न थे | जब गौतम उनके पास गए तो वह पुरुष गायब हो गया |

"जब अहल्या ने गौतम को भौचक्का और प्रश्नपूर्ण दृष्टि से उसे देखता पाया तो वह शर्म से बोली – "वह भ्रम था , ऋषिवर | एक भ्रम भगवान् इंद्र द्वारा मेरी इच्छानुसार रचा गया भ्रम|"

"गौतम ऋषि ने आगे कुछ नहीं पुछा | वे रोजाना के कार्यों में मशगुल हो गए लेकिन जो दृश्य उन्होंने देखा था वह उनके मन में अंकित हो गया |

"हमेशा की तरह गौतम और अहल्या "आकाश परीक्षा" के लिए बैठे | इंद्र देव ने अहल्या की देह को वापिस ले लिया | गौतम ऋषि ने अपने मन से उसे पुनः रच दिया | लेकिन अहल्या की आत्मा ने वह देह धारण करने से मना कर दिया | वह बोली – "यह देह धारण करने से अच्छा है मैं पथ्थर की देह धारण कर लूँ |"

"अर्थात "आकाश परीक्षा" असफल हो गई थी | गौतम और अहल्या के बीच का गुरु-शिष्या का रिश्ता टूट गया था | या तो गौतम गुरु के रूप में नाकाम हो गए थे अथवा अहल्या शिष्या के रूप में |

"इतना ही नहीं , अहल्या की आत्मा एक पत्थर देह में प्रवेश कर गई थी | किसी ऐसे पत्थर में नहीं जिसे पूजा जाता हो | बल्कि वो पत्थर जो ऋषि गौतम के आश्रम के द्वार पर रखा था | वो पत्थर जिस पर पैर रखकर ऋषि गौतम के आश्रम में प्रवेश होता था | यह अहल्या के यह जताने का तरीका था कि द्वार पर रखा पत्थर उसके लिए गौतम द्वारा रची देह से बेहतर था |

'ऐसा उसने क्यों किया? आकाश परीक्षा के दौरान ऋषि गौतम द्वारा रची उसकी देह में ऐसा क्या गलत था ? वास्तव में गौतम के मन ने अहल्या के बारे में एक गलत धारणा बना ली थी उस दृश्य को देखने के बाद जो उन्होंने बाग़ में देखा था | गौतम ने यह निष्कर्ष निकाल लिया था कि अहल्या किसी अन्य पुरुष के साथ थी , फिर चाहे वो वास्तविक था या भ्रम रूप | गौतम की यह धारणा उनके द्वारा रची गई अहल्या की देह में भी स्थापित हो गई | इसलिए अहल्या ने उस देह को स्वीकार करने से मना कर दिया |

"ऋषि विश्वामित्र ने अहल्या के बारे में राजकुमार श्री राम को मात्र इतना ही बताया था जब वे ऋषि गौतम के आश्रम की ओर बढ़ रहे थे |

“मैं भी इस कहानी को यही पर छोटा सा विश्राम दूंगा ताकि आप अपने मन की प्रवृति को समझ पाओ |

“ब्रह्मज्ञान के जिज्ञासु सत्यसाधक के रूप में आपका मन धारणा रहित होना चाहिए | आपके मन को एक सूचना प्राप्त हुई है जिसके आधार पर यह एक मानसिक चित्र बनाने की कोशिश कर रहा है | मैंने आपको केवल आधी कहानी बताई है | अर्थात मिली सूचना के आधार पर आपका मन पूर्ण चित्र बनाने में असमर्थ है | तो या क्या करेगा ? क्या यह चित्र बनाने का प्रयास छोड़ देगा ? या .. यह अपने अन्दर से ही सूचना पैदा कर लेगा चित्र पूरा करने के लिए ?

“मैंने आपको बताया कि गौतम ने अहल्या को किसी अन्य पुरुष के साथ देखा | अब आपका मन यह धारणा बनाने का प्रयास कर रहा है कि वह पुरुष कौन था | आपमें से कुछ लोग “बुरी अहल्या” का मन चित्र बना रहे हैं यह मानकर कि उसने नियमों का उल्लंघन किया | अर्थात आप उसके बारे में एक धारणा बना रहे हैं |

“और आप में से कुछ लोग “साधारण अहल्या” का मन चित्र बना रहे हैं यह मानकर कि अगर वह किसी पुरुष के साथ थी तो उसके पीछे कोई कारण रहा होगा | अर्थात आपका मन अहल्या पर कृपा दिखा रहा है |

“एक जागृत मन न तो उस पर कृपा दिखायेगा न ही उसके बारे में कोई धारणा बनाएगा | ऐसा मन अधूरी सूचना द्वारा बने अधूरे मन चित्र को पूरा करने के लिए उसमे अपने स्वयं के रंग नहीं जोड़ेगा |

“और मन द्वारा मिली सूचना कभी पूरी नहीं होती | अगर आपको किसी घटना के बारे में लाखों सूचना अंश भी मिल जाएँ तो भी आप वास्तविकता नहीं जान सकते | आप केवल वास्तविकता का एक पहलु जान सकते हैं| एक जागरूक मन को यह सत्य धारणाये बनाने से रोकेगा |

“यह करना कहने से बहुत मुश्किल है | उदाहरण के तौर पर , मान लो कि दो अजनबी आपस में लड़ाई कर रहे है | आपके लिए उनको नजरअंदाज करना आसान है , इसलिए आप ये धारणा नहीं मनाएंगे कि कौन सही है और कौन गलत | किन्तु अगर आप उनमे से किसी से किसी रूप में जुड़े है, लगाव रखे हुए हैं , तो आपका मन तुरंत यह धारणा बनाने पर तुल जाएगा कि कौन सही है और कौन गलत | ऋषि किसी से ऐसे लगाव नहीं रखते थे | अतः वे किसी के बारे में धारणा नहीं बनाते थे | किन्तु भगवान् राम के जन्म के काल में ऋषियों को भी लगाव हो गया था , किसी मानव से नहीं अपितु नियमो से , उन नियमों से जो उन्होंने स्वयं समाज के लिए रचे थे |

“जब गौतम ने अहल्या को उस पुरुष के साथ देखा तो वे धारणा बनाए बिना नहीं रह सकते | आखिर यह नियमो का उल्लंघन था , नियम बनाने वाले ऋषि के घर में ही |

“जब अन्य ऋषियों ने इस घटना के बारे में सुना तो वे भी धारणा बनाए बिना नहीं रह सके |

“ऋषि विश्वामित्र ऋषि व्यवस्था के विद्रोही थे | उनके मन ने अहल्या के प्रति धारणा नहीं बनाई लेकिन वे उसके प्रति कृपा दिखाने वाला भाव जगा बैठे | उनकी सोच थी – “तो क्या अगर यह नियमों के विपरीत था | कभी कभी नियमों को किसी बड़े उद्देश्य के लिए ताक पर रखना पड़ता है | अहल्या ने जो भी किया उसके लिए उसके पास कोई कारण रहा होगा |

“लेकिन राजकुमार राम ने न तो अहल्या के प्रति धारणा बनाई और न ही कृपा वाला भाव जगाया | जब विश्वामित्र जी ने यह घटना उन्हें सुनाई , उनके मन ने इस सूचना को स्वतंत्र रूप से बहने दिया , मन के किसी गड्डे में कोई धारणा नहीं टिकने दी |

"जब राजकुमार राम ने ऋषि गौतम के आश्रम के द्वार पर रखे पत्थर पर पैर रखा तो उन्होंने अन्दर गौतम को अपने बाग़ में बैठा पाया , झूले की ओर उनका मुंह था और उस झूले पर एक सुन्दर महिला बैठी गौतम की ओर मुस्कुरा रही थी | भगवान् राम को पता था कि वह महिला गौतम ऋषि के मन द्वारा रचित अहल्या की भ्रम देह थी | गौतम यह प्रतीक्षा कर रहे थे कि अहल्या की आत्मा उस देह में प्रवेश करे लेकिन उस देह में कुछ खोट था जिसके चलते अहल्या उसमे प्रवेश नही कर रही थी | खोट था गौतम ऋषि की धारणा | अगर गौतम उस धारणा से पीछे छुटा लेते तो अहल्या उस देह में पुनः प्रवेश कर सकती थी |

"गौतम के लिए उस धारणा से पीछा छुटाना आसान नहीं था | जब उन्हें इंद्र देव से पता चला था कि अहल्या के साथ बैठा पुरुष कोई और नहीं बल्कि अहल्या रचित गौतम का ही एक भ्रम रूप था तो उनका हृदय अपराध बोध से ग्रसित हो गया था | अहल्या के प्रति धारणा बनाने का अपराध | परिणामस्वरूप , उस घटना को भुलाना और इस धारणा को साफ़ करना उनके लिए और भी मुश्किल हो गया था |

"उनके आश्रम में बहुत से ऋषि आये थे उसके बाद | उनमे से कोई भी गौतम द्वारा रचित अहल्या के भ्रम रूप में से उस धारणा को नहीं काट पाया | स्वयं विश्वामित्र भी नहीं| क्योंकि उन सबके उस घटना के बारे में अपने विचार तथा धारणाएं थी |

"लेकिन जब अहल्या के भ्रम रूप को भगवान् राम ने देखा , उनकी दृष्टि ने तुरंत उस धारणा को उस भ्रम रूप से काट दिया और अहल्या की आत्मा उसमे प्रवेश कर गई | और वह भ्रम रूप आत्मा के प्रवेश के पश्चात् वास्तविक अहल्या बन गया |

"हे मातांगो , यह है प्रभु श्री राम की महानता | कर्म के नियम भले ही माफ़ न करें लेकिन भगवान् राम अपने भक्तो द्वारा भूतकाल में किये कर्मों के अनुसार उनके प्रति कोई धारणा नहीं बनाते |" हनुमान जी ने अपने व्याख्यान को विराम दिया और बाबा मातंग को यजमान दयानी के लिए अर्पण शुरू करने का इशारा किया |

सभा में कई सिर ऊपर उठे | सभी युवा मातंगों को लगा कि हनुमान जी का यह व्याख्यान अचानक रुक गया था | उन्हें लगा कि हनुमान जी ने पूरी कथा नहीं सुनाई | उनके मन में कई प्रश्न उठ खड़े हुए | अगर वास्तविक गौतम वहां पर थे तो अहल्या को गौतम का भ्रम रूप बनाने की क्या आवश्यकता थी ? अहल्या द्वारा रचित गौतम का भ्रम रूप इतना सुन्दर क्यों था कि असली गौतम उसे पहचान भी नहीं पाए और उसे कोई अन्य पुरुष समझ बैठे?

हनुमान जी ने देखा कि सभा में जिज्ञासा की उमस भर गई थी , बिलकुल वैसे जैसे वर्षा आने से पहले उमस होती है |

हनुमान जी ने जान बुझकर अधूरी सूचना मातांगो को दी थी और अब सभी मातंगों के मन अहल्या का मन चित्र पूरा करने के लिए और सूचना को तरस रहे थे | उनका काम था मन को नियंत्रित करके उसे अहल्या के मन चित्र को अपनी धारणाओं के रंग का प्रयोग करके पूरा करने से रोकना |

और ऐसा ही हुआ | जैसे ही हनुमान जी ने अपनी दृष्टि एक एक करके सभी मातंगों पर घुमाई, अनावश्यक जिज्ञासा के बादल छंट गए और मातांगो को वह ज्ञान हो गया जो हनुमान जी उन्हें करवाना चाह रहे थे |

[सेतु टिपण्णी: इस अध्याय में हनुमान जी सुनने/पढने वाले के मन में कुछ सवाल छोड़ जाते हैं | इस व्याख्यान का उद्देश्य ही ज्ञानपिपासु के मन को धारणाओं से दूर रहने का अभ्यास कराना है | अपने मन का परिदर्शन कीजिए जबकि यह और सूचना की इच्छा रखता है | इसके साक्षी बनिए कि कैसे आपका मन अधूरी सूचना को पूर्ण करने के लिए स्वयं की धारणाएं पैदा करने का प्रयत्न करता है |]

हनुमान जी की लीलाओं का यह अध्याय यही समाप्त होता है |

Like You and 20K others like this.

--- सीधे अर्पण पर जाएँ ---

आत्मा पर भ्रम की परतें

Himanshu, अध्याय पढने के बाद यह पर्यवेक्षण करना आवश्यक है कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं | अगर आप कुछ ऐसा महसूस कर रहे हैं - "वाह! मैंने कुछ नया पाया |" अथवा "वाह, मैंने कुछ नया सीखा |" अथवा "मेरी अपने प्रभु ले प्रति भक्ति ओर भी बढ़ गई|" इत्यादि तो आप अपने प्रभु की ओर एक कदम भी नहीं बढ़ें हैं | आप उतनी ही दूरी पर अटके हुए हैं |

अगर अध्याय पढने के बाद आप कुछ ऐसे महसूस कर रहे हैं जैसे आपके अन्दर से कुछ बाहर निकलकर गिर पड़ा हो और आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हों तो आप अपने प्रभु की तरफ कम से कम एक कदम बढ़ चुके हैं |"

आपकी आत्मा एक आईने की तरह है जिसके ऊपर इस बाहरी संसार के कारण धुल चढ़ गई है | अगर अध्याय पढने के बाद आप ऐसा महसूस कर रहे हैं कि आपने कुछ नया पा लिया है तो उसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा पर एक और परत चढ़ा ली है | आप प्रभु के साक्षात् दर्शन तभी कर सकते हैं जब आप ये परतें हटायें | अतः अगर आप इस समय आत्मा से हल्का महसूस नहीं कर रहे हैं तो आप कुछ समय बाद फिर आकर यह अध्याय पढ़िए |

अगर आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हैं तो इसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा के आईने से कम से कम एक धुल की परत साफ़ कर ली है | अब आपका अगला कदम होना चाहिए कि यह धुल की परत वहां पुनः न बैठे | (जब आप अपने घर में कोई आइना कपडे से साफ़ करते हैं तो आप उस कपडे को अन्दर यूँ ही नहीं रख देते , आप उसे बाहर झड़काकर आते हैं)

धुल की परत फिर से आत्मा पर न बैठे, इसके लिए प्रभु को अर्पण किया जाता है | अर्पण फूलो , फलो या किसी भी ऐसी वस्तु का हो सकता है जो आपसे जुडी हुई हो | मातंग संस्कृति में आत्मा से हल्का महसूस करने के 108 घंटे के अन्दर अन्दर अर्पण करने का विधान है | आप बाजार से भी फल का अर्पण खरीद सकते हैं क्योंकि आपका पैसा भी आपसे जुडा हुआ है |

भगवान् विष्णु का अंतिम अवतार

जब भगवान् राम ने अपनी सांसारिक लीलाएं पूरी की और विष्णु लोक में चले गए तब हनुमान जी भी अयोध्या से वापिस आ गए और जंगलों में रहने लगे | वे अपने अदृश्य रूप में भक्तों की सहायता करते रहे | लेकिन जब महाभारत काल में भगवान् विष्णु कृष्ण के रूप में धरती पर आये तब हनुमान जी भी जंगलों से बाहर आये और पांड्वो की सहायता की (उन्होंने पूरे युद्ध में अर्जुन के रथ की रक्षा की)

महाभारत युद्ध के पश्चात् हनुमान जी फिर जंगल में चले गए | उन्होंने अदृश्य रूप में भक्तों की रक्षा करना जारी रखा | लेकिन दृश्य रूप में केवल ऋषि मुनि ही उन्हें देख सकते थे वो भी जंगलों में | उदाहरण के तौर पर , मातांगो को जंगल में हर 41 साल बाद उनके आतिथ्य का सुख प्राप्त होता था |

अब हनुमान जी ने अपनी लीलाए करके एक बार फिर से पूरे संसार के सामने अपने दृश्य स्वरुप का दर्शन कराया है | लेकिन वे ऐसा तभी करते हैं जब भगवान् विष्णु किसी अवतार में धरती पर मौजूद हों | क्या भगवान् विष्णु ने कल्कि के रूप में अवतार ले लिया है ? या अवतार लेने वाले हैं ? इसके कुछ हिंट हनुमान जी ने अपनी लीलाओं में दिए हैं | शायद आगे आने वाले अध्यायों में यह पूर्णतः सपष्ट हो जाएगा |

तब तक श्री हनुमान जी के निर्देशानुसार साक्षात् हनुमान पूजा अनवरत जारी है | अगर आप अपना कोई प्रश्न , संदेह अथवा प्रार्थना साक्षात् हनुमान पूजा में सम्मिलित करवाना चाहते हैं तो सेतु के माध्यम से कर सकते हैं | (write them in "My Experiences" section.)

Himanshu, आप साक्षात् हनुमान पूजा में अर्पण भेजकर यजमान के रूप में भी हिस्सा ले सकते हैं | अर्पण हनुमान जी की लीलाओं का अध्याय पढने के 108 घंटे के अन्दर होता हैं |

Your Offerings so far at this chapter: Fruits worth

Rs. 0

Offerings have been closed for you on this chapter because 108 hours have passed since you first read this chapter.You did not give offerings in that time period. Check next chapter.

Your Successful transactions on this chapter :

No successful Arpanam attempt from you on this chapter so far.

Your Incomplete/Failed transactions on this chapter :

You don't have any incomplete or failed transaction on this chapter.

« Previous Next Chapter »

भक्तिमाला मंत्र अनुभव कृतज्ञता प्राचीर विन्यास

Home मातंग इतिहास Terms of Use Privacy Policy Reach Us तकनीकी सहायता Setuu © 2016 Read in English

Gratitude Wall Devotee Queries Experiences and Prayers Hanuman Leelas

Print